ब्राह्मण महामण्डलोद्यानस्य द्वितीयं पुष्पम्



शिवरात्रि पूजा विधिः

संक्षिप्त तथा सर्वांग

संपादक :–
ब्राह्मण महामण्डल कश्मीर
श्रीनगर

पुस्तकें मिलने का पता :–
ब्राह्मण महामण्डल कश्मीर
गणपतयार श्रीनगर

प्रथम संस्करण १०००
१५ फरवरी १९८१



स्नेह पूर्ण उपहार

ब्राह्मण महामण्डल कश्मीर (रजिस्टर्ड)

प्रस्तावना

शिवरात्रि वा हररात्रि का महान पर्व कश्मीरी पण्डित जनता सनातन काल से कश्मीर में मनाते आये हैं। यह पर्व अधिकतर ताँत्रिक पूजा अथवा भैरवयाग से प्रसिद्ध है। यह पर्व फाल्गुण कृष्ण प्रतिपदा से लेकर प्रायः अमावसी तक मनाया जाता हैं परन्तु त्रयोदशी को विशेष पूजा होती है क्योंकि इसी दिन भगवान शिव ज्वाला रूप में प्रकट हुए हैं च्यूंकि समय परिवर्तन शील है अतः इस पर्व की पूजा पद्धिती में भी परिस्थितिवश परिवर्तन आना स्वाभाविक हुआ है, फिर भीं ऐसा कोई कश्मींरी पण्डित परिवार नहीं जो इस त्यौहार के पूजा पाठ की रचना अपनी कुल रीति अनुसार सामिष अथवा निरामिष अपनाई प्रथा से भैरवों को बलि देकर बलि शेष का नैवेद्य न करता हो।

कहना न होगा कि इस त्यौहार की पूजा प्रायः प्रत्येक कश्मीरी पण्डित परिवार निज कुलगुरु द्वारा करता आया है पर समय की जटिल समस्याओं से प्रभावित पुरोहित–वर्ग जीविका उपजनार्थ अन्य व्यवसायों में व्यस्त होते जा रहे हैं और जिनकी जीविका नितांत पुरोहिताई पर है लोप ग्रस्त होते जा रहे हैं। इस तरह का आभास होने पर धार्मिक परम्परा स्थिर और सुरक्षित रखने के लिए साधारण–तया प्रत्येक पर्व–पूजा विशेष कर शिवरात्रि पूजा प्रायः प्रत्येक कश्मीरी पण्डित परिवार को स्वयं रचाना अवश्यंभावी बनने लगा है। फलतः आदर्श पुस्तिकाओं की आवश्यकता पडने लगी है यद्यपि इस विषय में कई महानुभावों ने आदर्श प्रकाशित किये हैं। और

महामण्डल ने भी कुछ वर्ष पूर्व उर्दू लिपि में एक पुस्तिका प्रकाशित की है, किन्तु सर्वसाधारण को इन में कुछ न्यूनता कुछ अधिकता का अनुभव हुआ है। परिणाम स्वरूप महमण्डल को कई एक दिशाओं से अनुरोध हुआ है कि वर्तमान स्थिति–वश मनुश्य की व्यस्तता तथा संकुलता के दृष्टिगोचर शिवरात्रि पूजा की एक ऐसी आदर्श पुस्तिका प्रकाशित हो जो संक्षिप्त भी हो और सर्वांग भी हो। ब्राह्मण महामडण्ल ने इस मांग की पूर्ति के लिए निज विद्धत परिषद को प्रेरित किया और इस के निरीक्षण में इस अदर्श पुस्तिका को सम्पन्न कर भक्त जनों को प्रस्तुत किया है, जिससे उनको शिवरात्रि पूजा की निज परम्परा स्थापित रखने की सुविधा प्राप्त हो। इस पुस्तिका के संपन्न करने में श्री विश्वनाथ राजदान श्री पीताम्बर जी शास्त्री तथा श्री शम्भू नाथ जी कल्ला ने मण्डल को विशेष योगदान दिया है, जिसके लिए महामण्डल उनका आभारी है।

पुस्तिका के साथ हमने शिवरात्रि पर्व के सम्बन्ध में, कब एक और कब दो होती है, का संक्षिप्त परिचय दिया है। आशा है कि पाठक इस से लाभ उठायेंगे।

निवेदक :–
राधा कृष्ण रैणा
प्रधान
ब्राह्मण महामण्डल कश्मीर

तिथि १८–२ १९८१

नो॰ शिवरात्रि एक या दो होने के विषय में विस्तार पूर्वक जानकारी के लिये महामण्ड द्वारा प्रकाशित शिवरात्रि "हररात्रि" निर्णय का अध्ययन करें।

उों नमः शिवाय

"वटुक पूजाविधि"

पूर्व दिशा की तरफ मुख करके पूजा में बैठना चाहिए, अपने सामने वटुक के मण्डल को संभाल कर रखे वटुक नटू के नीचे सामने चूने या चाक से कलश का चित्र बना कर उसके ऊपर अखरोटों के समेत कलश वागरू रखना, सारे वटुक मंण्डल को सिन्दूर के तिलक उसरू को नारीवन और फूल आदि मालाओं से सुसज्जित करे। (कलश का चित्र और वटुक मण्डल का चित्र पृष्ट एक पर देख कर रखें) इस तरह सारी सामग्री सामने लाकर सर्व प्रथम कलश की पूजा करें मन्त्रों को पढते हुए दाने दाने फूल और अर्घ चढाते जाइये। कलश पूजा मन्त्र :–

ओंकारो यस्य मूलं क्रमपद जठरं छन्दविस्तीर्णशाखा, ऋक्पत्रं साम–पुष्पं यजुरुचितफलं, स्यादथर्वा प्रतिष्ठा ॥ यज्ञश्छाया सुश्वेतैर्द्विज–गणमधुयैर्गीयते यस्य नित्यं शक्ति संध्या त्रिकालं दुरितभय हरः पातु नो वेद वृक्षः ॥

मूलाधाराद्धुत वह कलामिश्रितं भूर्भुवः स्वर्ब्रह्मस्थानात्परम गहना–त्तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गोदेवः शशि कलमयी धीमहीत्येकरूपं धियोयोनः पिवतममृतं चोदयान्नः परंतत् ॥

मुक्ता विद्रुम हेम नील धवल च्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दु निबद्ध रत्न मुकुटाँ तत्वात्मवर्णात्मिकाँ। गायत्रीं वरदाभयाँ कुशकराँ शूलं कपालं गुणं शंखं चक्रमथार बिन्दु युगलं हस्तै वहन्तीं भजे॥

आयातु वरदा देवी अक्षरा ब्रह्म वादिनी गायत्री छन्दसाँ मातर्ब्रह्म योने नमोस्तुते॥

ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोसि देवानाँ धाम नामसि विश्वमसि विश्वायु: सर्वमसि सर्वायुरभिभू: ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेणं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योन: प्रचोदयात् ॐ ३॥

भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं भद्रं वहेम शृणुयाम भद्रं। तन्नो मित्रो वरुणो मा महन्तामदिति: सिन्धु: पृथिवीं उतद्यौ। तद्विष्णो: परमं पद सदा पश्यन्ति सूरय:। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवाँस: समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥

ॐ गायत्र्यै नम: ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहे धियो योन: प्रचोदयात्॥

क्षेत्रपालों अर्थात सनिवारी मचिवारी आदि को अर्घ के दाने छोडते हुए निम्न मंत्र पढे

अश्वमेधे घोराणामार्षम्॥ द्रष्ट्रे नम: उप द्रष्ट्रें नमोऽनुद्रष्ट्रे नम: ख्यात्रें नमऽनुख्यात्रे नम: शृण्वते नम उप शृण्वते नम: सते नमोऽसते नमों जाताय नमो जनिष्यमाणाय नमो भूताय नमो भविष्यते नम-स्चक्षुषे नम: श्रोत्राय नमो मनसे नमो वाचे नमो ब्रह्मणे नम: श्रान्ताय नमस्तपसे नम:

फिर से कलश को अर्घ पुष्प चढाये

भूतं भव्यं भविष्यटूषट् स्वाहा नम ऋक् साम यजुर्वषट् स्वाहा नमों गायत्री त्रिष्टुब् जगती वषट् स्वाहा नम: पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्वंषट्

स्वाहा नमोऽन्नं कृषि वृ ष्टिर्वषट् स्वाहा नमः पिता पुत्रा पौत्रो वषट् स्वाहा नमः प्राणो व्यानोऽपानो वषट् स्वाहा नमो भूर्भुवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः

स्वासू कवल नारीकच्चलू या किसी पर्वं में थोडा सा जल और दर्भ की दो तोलियों का विष्ठर बनाकर उसमें रखे इस तरह के जल और विष्टर वाले पात्र को प्रणीत पात्र कहते; नीचे लिखे मन्त्र से प्रणीत पात्र में तीन दफा फूल डाले

संवः सृजामि हृदयं संसृष्ट मनो अस्तु वः। संसृष्टा स्तन्वः सन्तुवः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः। संयावः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः सं प्रियास्तन्वो मम ॥

अब प्रणीत पात्र के विष्ठर से कलश और वटक मण्डल को छीटें देते यह मन्त्र पढ़े

अग्नेरायुरसि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृतस्तेनास्मा आयुष्मा आयुर्धेहि इममग्न आयुषे वर्चसे कृधितिग्ममोजो वरुण सं शिशाधि। माते वास्मा आदित्ते शर्म यच्छ विश्वेदेवा जरदष्टिर्यथा सत् ॥ अश्विनोः प्राणस्तौते प्राणं दत्तां तेन जीवा मित्रा वरुणयोः प्राणस्तौते प्राणं दत्तां तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः सते प्राणं ददातु तेन जीव ॥

थोडा सा चावल और तिल दानों को उठकर सारे वटक मण्डल के चारों ओर भिखेर कर यह मन्त्र षढे

"सर्वेभ्यो रक्षोग्नेभ्यः स्वाहा"

अब प्रणीत पात्र के विष्टर से अपने समेंत जल और अन्य पूजा सामग्री को छींटें देते हुए यह मन्त्र पढे इससे शुद्धि हो जाती है

आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। योव: शिवतमोरसस्तस्य भाज यतेहन:, उशतीरिवमातर:॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथाचन:॥

कलश के नीचे जो षट कोण है उसके प्रत्येक कोणे तथा बीच वाले भाग को तिलक और अर्घ लगाते जाये बाइयें कोने से आरंभ करना

महागणपतये नम: कुमाराय नम:, श्रियै नम:, द्वारदेवताभ्य: सरस्वत्यै नम:, लक्षम्यै नम:, विश्वकर्मैंणे नम:'

अब कलश के अन्दर फूल आदि छोडते जाइये

प्रजापतये नम: ब्राह्मणे नम: कलशदेवताभ्यो नम: ब्रह्माविष्णु महेश्वर देवताभ्यो नम: चतुर्वेदेश्वराय नम: सानुचराय, ऋतुपतेनारायणाय नम: दुर्गायै नम:, त्र्यम्बकाय नम;, वरुणाय नम:, यज्ञपुरुषाय नम:, अग्निश्वातादिभ्य: पितृगण देवताभ्यो नम:॥ रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वं भूतनिवेशिवीं, भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्॥ संवेशिनीं संयमनीं ग्रह नक्षत्र मालिनोम्। प्रपन्नोहं शिवाँरात्रीं भद्रे पारमशीमहि नम:॥ कालरात्र्यै नम:, तालरात्र्यै नम:, रज्ञिरात्र्यै नम:, शिवरात्र्यै नम:॥ यो रुद्रौ अग्नौ य अप्सो य ओषधीषु यो वनस्पतिषु॥ यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मैं रुद्राय नमो अस्तु देवा:॥ क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसिगामश्वंयोषयित्वा सनो मृडा तीदृशे नम:॥

पूर्वी देवीपुत्रवटुक नाथाय, आग्नेये भूतगलेभ्यः, दक्षिणे अग्निवेतालाय नैर्ऋते बहुखातकीश्वराय, पश्चिमी स्थानक्षेत्रपालाय, वायवे मंगल राजाय, उतरी योगनी बलेभ्यः, ईशाने विश्वक्सेनाय ऊर्ध्वे जयक्सेनाय, पाताले तेजाय, मध्ये चण्डाय, थले-थले थल हंसके स्थान क्षेत्रपालेभ्यो नमः समस्त शिवरात्रो यागदेवताभ्यो नमः ॥ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाँसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमंपदम् ॥ भगवते वासुदेवाय नमः, संकर्षणाय, प्रद्युम्नाय, अनिरुद्राय, लक्षमी सहिताय नारायणाय नमः ॥ यो रुद्रो अग्गौ यो अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेशतस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः नमः । भगवते भगाव देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय महा देवाय पार्वती सहियता परमेश्वराय नमः । गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविंकवीनामुयमश्रवस्तमम् । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणाँ ब्रह्मणस्यत आनः श्रृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् नमः । भगवते विनायकाय नमः । एकदन्ताय हेरम्भाय कृष्णपिंगलाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय नमः ॥ चित्रंदेवानामुदगाहनीकं चक्षुमित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च नमः ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः सप्तश्वाय नमः एकश्वाय नीलश्वाय प्रभासहिताय- आदित्याय नमः ॥ जातवेदसे सुनवाम सोममराति यतो निदहातिवेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणिविश्वा नावेव सिन्धुं दुरित्यग्नि ॥ भगवत्यै अमायै नमः कामायै चार्वांग्यै यक्षिण्यै, श्री शारिकाभगवत्यै शारदा भगवत्यै महाराज्ञा भगवत्यै ज्वाला भगवत्यै सहस्रनाम्यै देव्यै भवान्यै नमः ॥ यत इन्द्र भयामहे तत्तनोऽभयँ कृधि मघञ्छगधि तवतन ऊतिभि विद्विषो विमृदो जहि नमः अभयंकरी देव्यै नमः, क्षेमंकरी भगवत्यै नमः सर्वंशत्रुघातिन्यै नमः इहराष्ट्राधिपते भैरवाय नमः तद्विष्णो परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समन्धिते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ उँ गायत्र्यै नमः । उँ भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ३ ॥

ऐन्द्राग्नं वर्म वहुलं यदुग्रं विश्वेदेव। नाति विध्यति शूरा: तन्नस्त्रयतां तन्व: सर्वतो महदायुष्मन्तो जरामुपगच्छेम जेवा: ।।

थोड़ा सा नैवेध (नवाद) कलश के सामने रखना उसे दूध का छीटा देकर अर्पण करना

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामादधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार देवताभ्य: ब्रह्म विष्णु महेश्वर देवताभ्य: चातुर्वेदेश्वराय ऋतुपतेनारायणाय सानुचराय फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निश्वाता-दिभ्य: पितृगणदेवताभ्य: कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै शिवरात्र्यै थले थले हंसके स्थान क्षेत्रपालेभ्य: समस्त शिवरात्री यागदेवताभ्य: विष्णु पञ्चायतनदेवताभ्य: अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरी भवान्यै सर्व शत्रुघातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये भैरवाय तिल तण्डुल मात्रं दधि मधु मिश्रं ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नम: ।।

कलश को और फूल चढाइये

हिरण्य गर्भा सम वर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाँविधेम नम: ।। अर्चन्तस्त्बा हवा महे अर्चन्त: समिधी महि। अग्नेरर्वत ऊतये अर्चत प्रार्चत प्रिय मेधसो अर्चत, अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णमर्चत अर्चत अर्चत ।।

पूजारम्भ

यजमान भद्रपीठ अथवा निर्माल्य के पात्र में सनिपुलू पार्थिवीश्वर या ठाकुर जी अपनी कुल रीति के अनुसार जैसे पूजा करते उस विधान से पूजा आरम्भ करें, सर्व प्रथम जञू लगाना उसमें जंग के लिए चावल आदि लाकर यजमान के दाहिने कन्धे को लगाना

जञू डालने का मन्त्र :–

यज्ञोपवीतं परमँ पवित्रं प्रजापतिर्यत् सहजं पुरस्तात् । ग्रायुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।। यज्ञोपवीतमसि यज्ञिस्त्वा उपवीतेन उपनह्यामि ।।

ग्रब जल भरे पात्र को उठा कर भगवान पर जल धारा छोडते हुए पढ़ें

उों ग्रस्य श्री ग्रासन शोधन मन्त्रस्य, मेरुपृष्ट ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मों देवतः ग्रासन शोधने विनियोगः मेरुपृष्टि ऋषये नमः शिरसि (सिर को हाथों से छूना) सुतलं च्छन्दसे नमः मूखे (मुख को) कूर्मों देवताय नमः हृदि (छाती को स्पर्श करें) ग्रासन शोधने विनियोगाय नमः सर्वांगेषु (सभी ग्रंगों को स्पर्श करें)

दर्भ की दो तिलयां पृथ्घी पर रखें :– ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामसि

पृथिवी को तिलक ग्रौर ग्रर्घ पुष्प लगावें :– प्रीं पृथिवी ग्राधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः ग्रर्घों नमः पुष्पं नमः

पृथिवी माता की ग्रौर हाथ जोड कर प्रार्थना करें :– पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वां विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

ग्रब भगवान का ध्यान करके हाथ जोड कर प्रार्थना करें :–

उों शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्न वदनं ध्याये-त्सर्व विघ्नोपशान्तये ।। ग्रभिप्रेतार्थं सिद्धयर्थम् पूजितोयः सुरैरपि । सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधि पतये नमः ।।

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारँ भुजगेन्द्रहारम् । सदारमन्तँ हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितँ नमामि ।। गुरुर्ब्रह्मा गुर्रुर्विष्णुर्गुरुः साक्षात्महेश्वरः । गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः । गुरुवे नमः, परम गुरुवे नमः परमेष्ठिने गुरुवे नमः । परमाचार्याय नमः ।। ग्राद्य सिद्धेभ्यो नमः ।। "ग्रथ न्यासः"

ओं अँगुष्ठाभ्यां नमः, (अँगूठों को स्पर्श करे) न तर्जनीभ्यां नमः (तर्जनी को छुए) म मध्यमाभ्यां नमः (मँजली अँगुली को) शि- अनामिकाभ्याँ नमः (अनामिका को) व कनिष्ठिकाभ्यां नमः (कनिष्ठा को) य करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों के तलवों को छुए) ओं हृदयाय नमः (हाथों से हृदय को स्पर्श करें) न शिरसे स्वाहा (सिरको) म शिखायै वषट् (चोटी को) शि कवचाय हु (कानों को) व नेत्राभ्याँ वौषट् (आंखों को) य अस्त्राय फट् (दाइने हाथ की तीन अँगुलियों को चारों ओर घुमाये)

थोड़े से तिलों को उठाकर मन्त्र पढते हुए कन्दों के ऊपर से फैंके :–

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि सँस्थिताः। ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवा ज्ञया ॥

"ओं नमः शिवायोंम्" मन्त्र से प्राणायाम करें

?ख और पैरों को छींटां देते हुए मन्त्र पढ़ें :– तीर्थे स्नेयँ तीर्थमेव समानानां भवति मानः शँस्यो अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्यते।

अनामिका में पवित्र लगाइये :– वसो पवित्रमसि शतधारँ वसूनां पवित्रमसि सहस्रधारमयक्षमावः प्रजया सँसृजामि रयस्पोषेण बहुला भवन्ति ॥

यजमान को टीका लगाने का मन्त्र :– मन्त्रार्थः सफला सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथः शत्रूणां बुद्धि नाशस्तु मित्राणां उदयस्तव आयु-रारोग्यँ ऐश्वर्यमेतत् त्रितयँ अस्तु जीवत्वँ शरदः शतम् रक्षाणो ब्राह्मणस्पते ॥

नारीवन बांधना :– शँनो भवतु मे द्विपदेशं चतुष्पदे रक्षाणो ब्रह्मणस्यते

खुद अपने आप को तिलक लगाना :- परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्च–भूतात्मकाय विश्वात्मने मँत्र नाथाय आत्मने नारायणाय आधार

शक्त्यै समालभनँ गँधो नमः। गन्धलेपँ निवरयेत् आत्मे नारायणाय अर्घो नमः पुष्पँ नमः

जलते हुए दीवे को तिलक और अर्घ देवें :– स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। प्रसीद ममगोविन्द दीपोयँ परिकल्पितः।

धूप को भी इसी तरह :– वतस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तम; आधारः सर्वदेवानां धूपोयँ परिकल्पितः॥

सूर्य का ध्यान करके निर्माल्य में तिलक और अर्घ डालें :– नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमः

विष्ठर वाले बर्तन को उठाकर भगवान पर जल धारा छोडते हुए पढ़ें

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धु भ्रातापिनो यत्रसुहृज्जनश्च। नज्ञायते यत्र दिनँ न रात्रिस्तत्रात्मदीपँ शरणँ प्रपद्ये॥ आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै धूप दीप सँकल्पात्सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपँ नमः॥ तत्सद्ब्रह्म अद्यतावत्तिथौवद्य फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां अमुकवारासन्नितायां महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मा-विष्णुमहेश्वर देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्भकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणयागदेवताभ्यः कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै रौद्ररात्र्यै शिवरात्र्यै देवीपुत्र-वटुकनाथाय भूतबलेभ्यः अग्निवेतालराजाय बहुखातकेश्वराय स्थान-क्षेत्रपालाय मङ्गलराजाय योगिनीबलेभ्यः विश्वक्सेनाय जयक्सेनाय तेजाय चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः शिवपञ्चायतन देवताभ्यः अभयङ्करीदेव्यै क्षमँकरीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपतये भैरवाय आत्मनोवाङ्मन. कायोपार्जितपापनिवारणार्थं शिवरात्री व्रत निमितँ धूप दीपात्सँकल्पात् सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपँ नमः॥

अपसव्येन (बाइयाँ जञ्जू करके पितरों का तर्पण करना) उों तत् सद् ब्रह्म अद्यतावत्ति थावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां अमुकवारान्वितायां समस्तमाता पितृभ्यो द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यः धूपस्वधा दीप स्वधा।

सव्येन दाहियां जञ्जू करके विष्ठर वाले पात्र में थोडा सा जल लेकर उसमें तिलक और फूल तीन बार इस मन्त्र से डाले संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्ठं मनौ अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तुवः सँसृष्टः प्राणो अस्तुवः संय्या वः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः आत्मावो अस्तु सं प्रियास्तन्वो मम॥

अब इस पात्र को उठाकर भगवान पर जलधारा छोडते जाइए अश्विनो प्राणस्तौते प्राणंदत्तान्तेन जीवमित्रावरुणयोः प्राणस्तौते प्रणंदत्तान्तेन जीव, ब्रहस्पतेः प्राणः सते प्राणन्दत्तात्तेन जीव।

अब दर्भ की दो तीलियां हाथ में लेकर देवता का न्यास करें उों अगुष्ठाभ्यां नमः न तर्जनीभ्यां नमः म मध्यमाभ्यां नमः शि अनामिकाभ्यां नम व कनिष्ठकाभ्यां नमः य करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः उों हृदयाय नमः न शिरसि स्वाहा म शिखायै वष्ट् शि कवचाय हुं व नेत्र त्रयाय वौष्ट् य अस्त्राय फट् देवस्य न्यासं परि कल्पयामि नमः।

इस तरह न्यास के पश्चात हाथ के दर्भों को छोड कर फिर से दर्भ की दो तीलियां और अर्घ लेकर पूजा करें उों भू पुरुषमाऽवाहयामि नमः उों भुवः पुरुषमावाहयामि नमः उों स्वः पुरुषमावाहयामि नमः उों भूर्भुवः स्वः पुरुषमावाहयामि नमः। उों भूर्भुवः स्वस्तत्सवितर्वरेण्यं भर्गों देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ३। ह्लीं श्रीं देवी पुत्राय विद्महे, क्षेत्रेशमुख्याय धीमहि, तन्नः वटुक भैरवः प्रचोदयात् ३।

कालरात्र्यै विद्महे तालरात्र्यै धीमहि तन्नः शिवरात्रि प्रचोदयात् ३ । उों तत् सद्ब्रह्माद्यतावत्तिथावऽद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्यां वारान्वितायां महागणपतेः कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्ष्म्यः विश्वकर्मणः द्वारदेवतानां प्रजापतेः ब्रह्मणः कलशदेवतानां ब्रह्म विष्णु महेश्वरदेवतानां चातुर्वेदेश्वरस्य सानुचरस्य ऋतुपतेर्नारायणस्य. फाल्गुणे शक्ति सहितस्य चक्रिणः क्रिया सहितस्य गोविन्दस्य दुर्गायाः त्र्यम्बकस्य वरुणस्य यज्ञ पुरुषस्य अग्निष्वात्तादीनां पितृगणयागदेवतानां कालरात्र्याः तालरात्र्या राज्ञिरात्र्याः रौद्ररात्र्याः शिवरात्र्याः देवी पुत्र वटुक नाथस्य भूतबलानां अग्निवेतालराजस्य बहुखातकेश्वरस्य स्थानक्षेत्र-पालस्य मङ्गलराजस्य योगिणी बलानां विश्वक्सेनस्य जयक्सेनस्य तेजस्य चण्डस्य थले थले थल हंसके स्थान क्षेत्रपालानां शिव-पञ्चायतन देवतानां अफयङ्करीदेव्यः क्षेमङ्करी भवान्याः सर्व शत्रु घातिन्या इह राष्ट्राधिपतेः भैरवस्य आत्मनोवाङ्मनः कायो पार्जित पाप निवारनार्थं शिवरात्रि व्रत निमित्तं कलश पूजनं शिवरात्री याग पूजनमर्चाहं करिष्ये उों कुरुषु ।

हाथ के दर्भ तीलियों को निर्माल्य में छोड कर कन्धों के उपर से तिल और अर्घ दानों को फेंके। दर्भ की दो दो तीलियां भगवान और वटुक मण्डल के सामने आसन के लिए छोडिए।

आसन देना विश्वेश्वर महादेव राज राजेश्वरे श्वर आसनं दिव्य-मीशान दास्येहं परमेश्वर। भगवतः मासाधिपतेः नारायणस्य फाल्गुणे शक्ति सहितस्य चक्रिणः क्रिया सहितस्य गोविन्दस्य भगवतः भवस्य देवस्य शर्वस्य देवस्य रुद्रस्य देवस्य पशुपते दे० उग्रस्यदे० भीमस्य दे० महादेवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य विणायकस्य वल्लभा-सहितस्य महागणेशस्य सेनाधिपत कुमारस्य महागणपतेः कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्ष्म्यः विश्वकर्मणः द्वारदेवताभ्यां प्रजापतेः ब्रह्मणः कलशदेवतानां ब्रह्म विष्णु महेश्वर देवतानां चातुर्वेदेश्वरस्य सानु-

चरस्य ऋतुपते नारायणस्य फाल्गुणे शक्ति सहितस्य चक्रिणः क्रिया सहितस्य गोविन्दस्य दुर्गायाः त्र्यम्बकस्य वरुणस्य यज्ञपुरुषस्य अग्निष्वात्तादीनां पितृगण देवतानां कालरात्र्याः तालरात्र्याः राज्ञिरात्र्याः शिवरात्र्याः भैरव मण्डल देवतानां शिवपञ्चायतन देवतानां इदं आसनं नमः।

अब फिर से हाथ में दर्भ की दो तीलियां और अर्घ ले कर पढ़ें

महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपते नारायणाय फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निश्वात्तादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः भगवते भवायदेवाय शर्वाय दे० रुद्राय दे० उग्राय दे० भीमाय दे० महादेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभासहिताय महागणेशाय क्लींकां कुमाराय कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै रौद्ररात्र्यै शिवरात्र्यै थले थले थल हंसके स्थान क्षेत्रपालेभ्यः भैरवमण्डलेभ्यः समस्तशिवरात्रि याग देवताभ्यः युष्मान्वः पूजयामि ओं पूजय।

विना दर्भ तीलियों के खाली अर्घ को छोडदें और फिर से अर्घ के दाने हाथ में लेकर आवाहन करें भगवन्तं मासाधिपतिं नारायणं फाल्गुणे शक्ति सहितं चक्रिणं क्रिया सहितं गोविन्दं भगवन्तं भवँदेवं शर्वदेवं रुद्रंदेवं पशुपतिं देवं उग्रँदेवं महादेवं पार्वती सहितं परमेश्वरं विनायकं वल्लासहितं महागणेशं सेनाधिपत्यं कुमारं महागणपतिं कुमारं श्रियं सरस्वतीं लक्ष्मीं विश्वकर्मणं द्वार्देवताः प्रजापतिं ब्रह्मणं कलश देवताः ब्रह्म विष्णु महेश्वर देवताः चातुर्वेदेश्वरं सानुचरं ऋतुपतिं नारायणं फाल्गुणे शक्ति सहितं चक्रिणं क्रिया सहितं गोविन्दँ दुर्गा त्र्यम्बकं वरुणं यज्ञपुरुषं अग्निश्वातादीः पितृगणयागदेवताः ओं ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुकनाथं समस्त शिवरात्रि देवताः शिवपञ्चायतन–

देवता: अभयङ्करी देवीं क्षेमङ्करी भवानी सर्व शत्रुघातिनीं इह राष्ट्राधिपति भैरवं आवाहयिष्यामि ओं आवाहय।

भगवान और वटुक मण्डल को फूल और थोडा सा बबर काठ का चूरण चडाते जाइए आयाहि भगवन्–शंभो सर्वेश गिरिजायते, प्रसन्नो भवदेवेश नमस्तुभ्यं हि शंकर। लिंगेत्र भक्तदययाक्षण मात्रमेक स्थानं विधाय भवमद्विहितां पुरारे। सर्वेश विश्वमय हृत्कमलाधिरूढः पूजां गृहाण भगवन् भव मेद्य तुष्टः। कुलाकुल पदे योसौ पालको भूत विग्रहः। चिदानन्द रसपूर्ण वन्दे वटुक भैरवम्॥ नृत्यन्तं भुजयुगलेत दत्ततालं, पंचास्यं दहन पतंग कोटिभासम्। सत्–पात्रँद्विजक, खड्ग चर्महस्तं वीरेशं वटुकमभीष्टदं प्रपदे। भगवन् पार्वतीनाथ भक्तानुग्रह कारक। अस्मत्–दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो॥

"ओं नमः शिवाय" मन्त्र से प्राणायाम करें :–

विष्ठर वाले बर्तन को उठाकर उसमें थोडा सा पानी लेकर दाहिनी हथेली पर जलधारा छोडते हुए मन्त्र पढ़े मन्त्र की समाप्ती पर दाहिने हाथ का पानी उसमें वापिस डालें जैसे :– शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पेतये शंय्योरभि स्रवन्तुनः।

इस तरह पानी वापिस डालकर पात्र में तिलक का छींटा और फूल डाले

लाजाश्च कुंकुभं चैव सर्वौषधि समन्वितं। दर्भांकुरं जलं चैव पञ्चांगं पाद्य लक्षणम्।

अब पात्र उठाकर भगवान पर पाद्य के लिए जलधार छोडते जायें

भगवन्तः पाद्यम्। महादेव महेशान महानन्द परात्पर। गृहाणपाद्यं मद्दत्तं पार्वती सहितेश्वर। भगवते मासादिपतये नारायणाय फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय भगवते भवाय देवाय

शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, पशुपते देवाय महादेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय विणायकाय प ल्लभा-सहिताय महागणेशाय सेनाधिपतये कुमाराय पाद्यं नमः ।

वटुक मण्डल को भी विष्ठर से छींटे देते जाये महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निश्वातादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः उों ह्लीं श्रीं देवीपुत्रवटूकनाथाय समस्त शिवरात्रि यागदेवताभ्यः अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्करी भवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपते भैरवाय महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरुकादिभ्यः वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः शेषं निवारलेत् ।

फिर से पहले की तरह हथेली पर जलधारा छोडते हुए मन्त्र पढ़े और पात्र में वापिस डालें शन्नो देवीरभिष्टय अपो भवन्तु पीतये, शंय्यो रभिस्रवन्तुनः ।

अब इसमें थोडा २ दही दूध घी चावल के दाने पानी जौ दाने और सरसों के दाने डाल कर भगवान को अर्घ्य दें आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतंच दधि तण्डुलाः यवाः सिद्धार्थकाश्चेति ह्यर्घ्यमष्टाङ्गमुच्यते । भगवन्तोऽर्घ्यम् । त्र्यम्बकेश सदाधार विपदां प्रतिघातक अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्यत्सर्वार्थि साधक ।

भगवान पर जलधारा छोडते जाइये भगवन् भवदेव शर्वदेव रुद्रदेव महादेव उग्रदेव भीमदेव पार्वतीसहित परमेश्वर विनायक वल्लभासहित महागणेश सेनाधिपति कुमार ।

कलश को विष्ठर से छींटा दे :— महागणपते कुमार श्रीः सरस्वति लक्ष्मीः विश्वकर्मन् द्वारदेवताः प्रजापते ब्रह्मन कलशदेवताः ब्रह्म—

विष्णुमहेश्वर देवता: चातुर्वेदेश्वर सानुचर ऋतुपते नारायण फाल्गुणे शक्ति सहित चक्रिण क्रिया सहित गोविन्द दुर्गे त्र्यम्बक वरुण यज्ञपुरुष अग्निश्वातादय: पितृगणदेवता: कालरात्रि तालरात्रि राज्ञिरात्रि सौख्यरात्रि शिवरात्रि उों ह्रीं देवीपुत्र वटुकनाथ समस्त शिवरात्री याग देवता: अभयङ्करीदेवि क्षेमङ्करी भवानी सर्व शत्रुघातिनि इह राष्ट्राधिपते भैरव इदंवोऽर्घ्यं नम:

फिर से पात्र में जल लेकर भगवान पर जलधारा छोडते हुए पढ़ें

त्रिपुरान्तक दीनार्ति नाशिन् श्रीकण्ट तुष्टये गृहाणाऽचमनं देव पवित्रोदक कल्पितं भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवी पुत्रवटुकनाथाय आचमनीयं नम: ।

फिर से पात्र मे जल लेकर पहले की तरह डाले त्रिकाल काल कालेश संहार करणोद्यत, स्नातुं तीर्थहृतैस्तोयैर्गृहाण परमेश्वर भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय उों ह्रीं श्रीं देवीपुत्रवटुकनाथाय मंत्रस्नानीयं नम:

अब भगवान को स्नान देने के लिए पानी में थोडा सा दूध, दही तिल, घी, शक्कर शहद, बेर, सरसों, काफूर, केसर, चन्दन, फूल, सर्वौषधि, बब्रकाठ, दूब, आदि जल में मिलाकर स्नान दें

असंख्याता: सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्यां तेषांसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।। येऽस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि । तेषां सहस्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि । ये नीलग्रीवा: शितिकंठा दिवं रुद्रा उपाश्रिता: । तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि । ये नीलग्रीवा: शितिकण्ठा: शर्वा अध: क्षमाचरा: तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि । ये वनेषु शष्पिंजरा नीलग्रीवा विलोहिता: तेषां सहस्रयोजने अवधन्वानि तन्मसि । येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु प्रिबतो जनान् । तेषां सहस्रयोजेन अवधन्वानि तन्मसि । ये भूतानामधि पतयो विशखास: कपर्दिन: तेषां०

ये पथीनां पथिरक्षय ऐडमृदा यव्युधः। तेषां० ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तु निषंगिणः तेषां० य एतावन्तो वा भूयां सो वा दिशो रुद्रा वितष्ठिरे तेषां०। नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्ष मिषवः तेभ्योदृश प्राची देश दक्षणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु तेनो मृडयन्तु तेयं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दधामि। नमो अस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषांवात इषवः तेभ्यो दश प्राचीदश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु तेयं द्विष्मी यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दधामि। नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः तेभ्मो दश प्राचोर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वाः तेभ्यो नमो अस्तु तेनो मृडयन्तु तेयं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जंभे दधामि। यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो वतस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वाभुवना विवेष तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवः भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पञ्चदशस्नानं परिकल्पयामि नमः विनायकाय वल्लभासहिताय महागणेशाय चतुर्दशस्नानं परिकल्पयामि नमः सेनाधिपतये कुमाराय षट् स्नानं परिकल्पयामि नमः नमो देवेभ्यः

कण्ठोपवीती (गले में जनू करके तर्पण करें) स्वहा ऋषिभ्यः

अपसव्येन (बाइयां जनू करके तर्पण) स्वधा पितृभ्यः

सव्येन आब्रह्मस्तम्व पर्यन्तं ब्रह्माड़ं सचाराचरं जगत्तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवमस्तु।

शुद्ध पानी उठाकर भगवान पर डालें त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंरयि-पोषणम् उर्वारुकमिव बन्धनाम्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् मन्त्र गुडकं परि-कल्पयामि नमः।

अव बाई हथेली पर थोडा सा जल और चावल के दाने लेकर भगवान के ऊपर घुमाकर दाहिने कन्दे के ऊपर से फेंक दे गृह्णन्तु भगवद्भक्ता

भूता प्रसाद वाहका: पंच मंत्राश्चये भूतास्तेषामनुचराश्चये ते तृप्यन्तु स्वाहा वौषट् आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः।

अंगूठे से भगवान की प्रणाली को छूकर नेत्रस्पर्ष करें तेजोरूप महेशान सोमसूर्याग्नि लोचन, प्रकाशय परँ तेजो नेत्रस्पर्शेन शँकर

निर्माल्य से भगवान को निकाल कर फूल इत्यादि के आसन पर रखें

आसनाय नमः, पद्मासनाय नमः, सिंहासनाय नमः, प्रेतासनाय नमः, किमासनँ ते वृषभासनाय किभूषणँ वासुकि भूषणाय उमाकलत्राय–किस्तुदेयँ गौरीश किं वचनीयमस्ति।

अब भगवान और मण्डल को चान्दी के वर्क तथा अन्य सजाने योग्य वस्तुवों से सजाये मानो महन्तमुत मानो अर्भकं मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम् मानो वधीं: पितरमुत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र गिरिषः अनुलेपनं नमः।

यहां पर ही महिम्नापार स्तोत्र पढ़ें होसके

भगवान को फूल या वस्त्र लगाएं कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदाभयदायक वस्त्रं गृह्णाण देवेश दिव्यवस्त्रोंप शौभितम्। भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवी पुत्र वटुकनाथाय वस्त्रं परिकल्पयामि नमः।

जञू लगाये सुवर्ण तारैरचितं दिव्यं यज्ञोपवीतकं। नीलकण्ठ मयादत्तं गृहाण अनुकम्पया भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्रवटुकनाथाय यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः।

अव भगवान और कलश तथा वटुक मण्डल को तिलक का छींटां देवें

त्रिपुरान्तक देवेश पार्वती प्राणवल्लभ। गृहाण गन्धं कश्मीर चन्द्र चन्दन कल्पितम्। भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय उों ह्रीं ह्रां श्रीं देवीपुत्रवटुकनाथाय विनायकाय वल्लभासहितत्य महा–गणेशाय सेनाधिपतये कुमाराय महागणपतये कलशदेवताभ्यः समालभनं

गन्धो नमः गन्धलेयं निवारयेत (अंगुली का तिलक धोले)

भगवान, कलश और वटुक मण्डल को अर्घ फूल लगाते जाए सदाशिव शिवानन्द प्रधान करुणेश्वर पुष्पाणि बिलपत्रादि विचित्राणिगृहाण मे भगवते भवाय देवाय ह्लां ह्लीं ज्वंसः पशुपतये नमः ओं ह्लां श्रीं देवीपुत्रवटुकनाथाय नमः विनायकाय वल्लभासहिताय महागणेशाय क्लींकां कुमाराय महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यैं विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्राह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वदेवताभ्यः चातुर्वदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय फाल्गुणे शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निश्वातादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः थले–थले थल हंसके स्थानक्षेत्रपालेभ्यो नमः समस्त शिवरात्रि याग देवताभ्यो अर्घों नमः पुष्पं नमः भवाय देवाय तेजोमूर्तये नमः पशुपतयेदेवाय वायु मूर्तये नमः उग्राय देवाय आकाशमूर्तये तमः महादेवाय सूर्य मूर्तये नमः भीमाय देवाय सोममूर्तये नमः ईशानाय देवाय यजमान मूर्तये नमः अर्घों नमः पुष्पं नमः।

धूप चढाने का मन्त्र महादेव मृडानीश जगदीश निरंजन धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गुल कल्पितम् भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय समस्त शिवरात्री यागदेवताभ्यो धूपं परिकल्पयामि नमः

रत्नदीप चढाना हिरण्यबाहो सेनानीर्गिरीश गिरिजापते दीपं गृहाण कर्पूरं कपिलाज्यत्रिवर्तम्। भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय देवीपुत्रवटुकनाथाय शिवरात्री देवताभ्यो रत्न दीपं परिकल्पयामि तमः। यहां पर आरती के लिए भक्तजन हाथों में फूलों का गुच्छा, दर्भ या

चंवर लेकर आरती पढ़ें व्याप्तचारचर,० जयनारायण,० लीलारब्ध०, चय जगदीश अथवा अतिभीषण० जो भी इच्छा हो अपनी श्रद्धा भक्ति के अनुसार पढकर भगवान को प्रसन्न करें

चामरँ रजनीनाथमरीचि प्रभमुत्तमम्। हेमदण्डयुतं देव गृहाण गिरजा पते। जय सर्वं जनाधीश जय गौरी पते शिव। जयदेव महादेव जय गंगाधरेश्वर। जय दग्ध पुराध्यक्षजय कालान्त-कारक जय काम विरामेश जय भक्तानुकम्पक। अतिभीषण कटुभाषण यम किंकर पटली कृतताडन परिपीडन मरणागम समये, उमयासह मम चेतसि यम शासन निवसन् शिव शंकर शिव शंकर हर मे हर दुरितम्। अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसंचय दलिते, पविकर्कश कटु जल्पितखल गर्हण चलिते शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन् शिव शंकर०। भव भंजन सुररंजन खलवंचन पुरहन्। दनुजान्तकरवि जान्तक भगवन्। गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन् मदनान्तक शिव शँकर०॥ शक्र शासन कृतुशासन चतुराश्रमविषये कलि विग्रह भव दुर्ग्रह रिपुदुर्वल समये द्विजक्षत्रिय वनिता शिशुदर कँपित हृदये शिव शँकर०॥ भव सँभव विविधामय परि पीडित वपुषँ दयितात्मज-ममताभर कलुषी कृत हृदयम्। करु मां निज चरणार्चन निरतँ भव-सततँ शिव शङ्कर०॥ भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय शिवरात्री देवताभ्यः चामरँ परिकल्पयामि नमः।

भगवान को छत्र अथवा फूल चढाये नवरत्नमयँ दिव्यँ मुक्ता जाल विभूषितँ। गृहाण छत्रँ भगवन् शिव भद्रासन प्रद। भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय शिवरात्री देवताभ्यः छत्रँ नमः।

भगवान को आइना दिखाये यदि आइना पास नहो तो हथेली दिखाये यस्य दर्शन मात्रेन विश्वँ दर्पण विम्बवत् तस्मैते परमेशायमकुरप-

याम्यहम् भगवते भवाय दवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय शिवरात्री देवताभ्य: आदर्शं परिकल्पयामि नम: ।

जल से तर्पण करें एताभ्यो देवताभ्य धूप दीपात्सँकलपसिद्धि रस्तु धूपो नम: दीपँ नम: ।

भगवान पर फूल डाले भगवते भवाय देवाय कलशदेवताभ्य: वासो नम:

नमस्कार करें :– एतासां देवतानामर्घ्यदानाद्यर्चनविधि: सर्व: प.रे पूर्णोऽस्तु ।

नबाद कन्द और दूध रखें क्षीराज्य मधुसंमिश्रँ शुभ्रदध्नासमन्वितम् । षडरसैश्च समायुक्तँ गृहाणान्नँ निवेदये । भवाय देवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय वटुकमण्डल देवताभ्या: मात्रामधुपर्कं नम: ।

इलाची, सुफारी, लोंग, काली मिर्च, नबाद, नारियल आदि ताम्बूल भगवान को अर्पण करें ताम्बूलं विविधैर्द्रव्यैर्नारिकेलादिभिर्युतम् । मुख शुद्धि करँ स्वामिन्गृहाण वरदोभव । भगवते भवाय देवाय पार्धती सहिताय परमेश्वराय ताम्बूलँ परिकल्पयामि नम: ।

दोनों हाथों से भगवान पर पुष्प डालें हरविश्वा खिलाधार निराधार निराश्रय पुष्पाँजलिमिमंशंभो गृहाण वरदो भव । भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पुष्पाॅजलिं समर्पयामि नम: ।

भगवान को आधीं परिक्रमा इसमें भी फूल चढाएं यानिकानि च पापान ब्रह्महत्यादिकानिच । तानि ताति प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध प्रदक्षिणात् उों नम: शिवाय भगवन् प्रसीद ।।

नम: शिवायस्तोत्र पाठ से भगवान कों फूल व बिल्ल पत्र से पूजा करै

नागेन्द्र हारय त्रिलोचनाय भस्माँगरागाय महेश्बराय देवादिदेवाय

दिगंबराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥ मातंगचर्माम्बर भूषणाय समस्त गीर्वाण गणार्चिताय त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय तस्मै म–काराय नमः० ॥ शिवामुखाम्भोज विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विना–शिकाय चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय तस्मै शिकाराय० ॥ बसिष्ट कुंभोद्भव गोतमादि मुनेन्द्रवंद्याय गिरीश्वराय। श्री नील कंठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय०॥ यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय० ॥

ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः कामदं मोक्षदं चैवं ओंकारं तं नमाम्यहम् ॥

नजातो नमृतो यश्च क्षयो यस्य न विद्यते नमन्ति देवताः सर्वाः नकारं तं० ॥ महादेवं महावक्त्रं महाध्यान परायणम्। महापाप हरं देवं मकारं तं० ॥ शिवात्पर तरो नास्ति शिवशास्त्रेषु-निश्चयः। शमन्ति सर्व पापानि शिकारं तं० ॥ वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कंठ भूषणम्। वामे शक्ति धरं देवं वकारं तं० ॥ यत्र तत्रस्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः। यो गुरुः सर्व देवानां यकारं तं० ॥

नमस्कार करें :– उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः ॥

प्रार्थना करें अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यमाज्यं मद्यदिने अद्ययथा संकल्पात् सिद्धिरस्तु अन्नहीनं, क्रियाहीनं, विधिहीनं द्रव्यहीनं मंत्रहीनं चयद्गतं तत्सर्वमच्छिद्रं संपूर्णमस्तु एवमस्तु।

भगवान को अपोशान देने के लिए दाहिनी हथेली पर जलधारा छोडते हुए फिर पात्र में डालकर भगवान और वटुक मण्डल को छीटा दें

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभि स्रवन्तुनः भगवते

भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय वटुक मण्डल देवताभ्य: अपोशानं नम: आचमनीयं नम:।

दक्षिणा के लिए फिर से दाहिनी हथेली पर पानी से संकल्प छोडते हुए वह पानी फिर डाल कर उसमें दक्षिणा के पैसे भिगो कर भगवान को अर्पण करें शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तुन:। शिवरात्री यागदेवताभ्यो दक्षिणार्थं तिल हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि एतादेवता: सदक्षिणा अनेन प्रीयन्ताँ प्रीता: सन्तु।

कलश को दोबारा फूल चढाइये उों तद्विष्णो परमं पदंसदा पश्यन्ति सूरय: दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासोविपन्यवो जागृवाँस: समिन्धते विष्णर्यत्परमं पदम्।

भगवान को भी इसी तरह फूल चढाइये नाथं नाथं त्रिभुवननाथं भूतिसितं त्रिनयनं त्रिशूलधरम्। उपवीतीकृतभोगिनमिन्दु कला शेखरं वन्दे ॥

वैश्वदेव

अब वैश्वदेवविधि तथा नैवेद्य मन्त्र यहाँ पर वैश्वदेव के लिए खाली पक्का हुआ चावल नैवेद्य के लिए रीति के अनुसार नवेद (प्रेपन्न) और कुलरीति के अनुसार भगवान का भोग तथा चुटू आदि सजाकर पहले अपने सामने अग्नि को संभालें अपने दाहिने तरफ अग्नि के नीचे वाले कोणें पर पात्र से जल तथा बिष्ठर रखें इस तरह वैश्वदेव कर्म किया जाता है पात्र मे थोडे से तिल और चावल के दाने छोडते हुए मन्त्र पढ़ें।

पत्रं तिलाक्षतैर्मिश्रं कुसमोदक विष्ठरै:, अग्नेश्चैशान दिग्भागेप्रणीत-मभिधीयते। प्रणीतं नैर्ऋति स्थाप्यँ सविष्णुर्नात्र सँशय: ॥

कोने वाले पात्र में तीन बार फूल डालें सँव्व: सृजामि हृदयँ सँसृष्टँ मनो अस्तुव: (१) सँसृष्टास्तन्व: सन्तुव: सँसृष्ट: प्राणो अस्तुव: (२) सँय्याव: प्रियास्तन्व: सँप्रिया हृदयानिव:। आत्मावो अस्तु सँप्रिय: सँप्रियास्तन्वो मम ॥

दर्भ की दो तीलियां अग्नि में जला कर दाहिने तरफ छोडकर प्राणायाम करें: निर्दिग्धँ रक्षो निर्दग्धारातिरपाग्ने। अग्निमामादँ जहि निष्क्रव्यादँ सीधा देव यजनँ वह ॥

अग्नि के कोणे वाले जल पात्र से नौ बार छींटें दें ऋतँ त्वा सत्येन परिसमूह्यामि, सत्यँत्वर्तेन परिसमूह्यामि, ऋतसत्याभ्यां त्वा परिसमूह्यामि। ऋतँ त्वा सत्येन पर्युक्षामि सत्यँ त्वर्तेन पर्युक्षामि, ऋतसत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि। ऋतँ त्वा सत्येन परिषिंचामि, सत्यँ त्वर्तेन परिषिंचामि, ऋतसत्याभ्याँ त्वा परिषिंचामि।

अग्नि के चारों तरफ चार दर्भ की तीलियां डालें यज्ञस्य संततिरसि यज्ञस्यत्वा सन्तत्यै स्तृणामि। पुरस्तात् दक्षिणत: उतरत: पश्चात् इति स्तरै: ॥

अग्नि को तिलक और फूल लगाइये अग्नियै शुकारूढाय स्वाहा सहिताय पावकाय समालभंनं गन्धो नम: अर्घों नम: पुष्पं नम:

दर्भ की दो तीलियों को अग्नि में जलाकर पक्के चावल में लगाये और घी भी थोडा सा डाले वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोऽग्रस्य अन्नस्य जुहुती पाकस्य घृतस्य संलिप्य यजमानायस्वस्त्यस्तु श्रृतमभिघार्य ॥

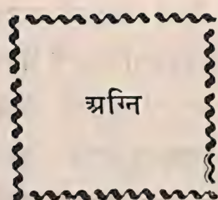
अग्नि में अन्न की आहुति डालते जाइये आदौ अग्नये स्वाहा इत्युत्तरत: सोमाय स्वाहा इति दक्षिणत: तयोर्मध्ये मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा इन्द्राय० इन्द्राग्निभ्यो: विश्वेभ्यो देवेभ्य० प्रजापतये० अनुमत्यै धान्वन्तरये० वास्तुष्पतये० वासुदेवाय० संकर्षणाय० प्रद्युम्नाय० अनिरुद्धाय०

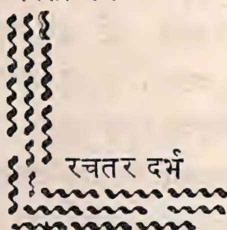
सत्याय० पुरुषाय० अच्युताय० माधवाय० गोविन्दाय० गोपालाय० सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्षमी सहिताय नारायणाय स्वाहा।

नैवेद्य के लिए यथा कुल रीति से जो कुछ पकाया हैं जैसे अन्न सलोना रोटियां आदि "प्रेपुन" भाग रखते उस विधि से सभी घर के सदस्य वह पकड के नैवेद्य मन्त्र पढ़ें अमृतेशमुद्रया अमृतीकृत्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्यांमादधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्षम्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वदेश्वराय सानुचराय ऋतुपते नारायणाय फाल्गुगे शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निश्वात्तादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः कालरात्र्यै तालरात्र्यै राज्ञिरात्र्यै रौद्ररात्र्यै शिवरात्र्यै देवीपुत्रवटुकनाथाय वासुदेवाय संकर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्राय सत्याय पुरुषाय अच्युतायमाधवाय गोविन्दाय सहस्रनाम्ने-विष्णवे लक्षमी सहिताय नारायणाय। भगवते भवायदेवाय शर्वाय देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय भीमाय देवाय महादेवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लंबोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभासहिताय श्री महागणेशाय क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय पार्वतीनन्दनाय सेनाधि-पतये कुमाराय ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै आमायै कामाये चार्वंग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदाभगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडा भगवत्यैं वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गंगा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्ध लक्षम्यैं महा-

लक्ष्म्यै महात्रिपुर सुन्दर्यै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै अभयङ्करी देव्यै क्षेमङ्करी भवान्यै सर्व शत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये भैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्ति हस्ताय यमाय दंड हस्ताय नैर्ऋतये खडग हस्ताय वरुणाय पाश हस्ताय वायवे ध्वज हस्ताय कुबेराय गदा हस्ताय ईशानाय त्रिशूल हस्ताय ब्रह्मणे पद्म हस्ताय विष्णवे चक्र हस्ताय अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्य: कुलनाग देवताभ्य: अग्न्यादित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमार भौमाभ्यां विष्णु बुधाभ्यां इन्द्राब्रहस्पतिभ्यां सरस्वती शुक्राभ्यां प्रजापति शनैश्चराभ्यां गणपति राहुभ्यां रुद्र केतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्य: पञ्चचत्वारिंशद्वास्तोष्पति देवताभ्य: ब्राह्म्यादिभ्यो मातृभ्य: गौर्यादिभ्यो मातृभ्य: ललितादिभ्यो मातृभ्य: दुर्गाक्षेत्र गणेश्वर देवताभ्य: राकादेवताभ्य: त्रिकादेवताभ्य: सिनीवाली देवताभ्य: यामीदेवताभ्य: रौद्रीदेवताभ्य: वारुणीदेवताभ्य: बार्हस्पत्य देवताभ्य: उों भूर्देवताभ्य: उों भुव: देवताभ्य: उों स्वर्देवताभ्य: उों भूर्भुव: स्वर्देवताभ्य: अखण्ड ब्रह्मांड यागदेवताभ्य: धूर्भ्य: उपधूर्भ्य: महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्य:। उों तत्सत् ब्रह्म अद्यतावत्तिथावद्य फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य अमुक तिथौ द्वादश्यां वा त्रयोदश्यां ....वारासनितायामत्मनो वाङ्मन: कायो पार्जित पाप निवारणार्थं शिवरात्रीं व्रत निमित्तमोंनमो नैवेद्यं निवेदयामि नम:।

अब अग्नि के दाहिने तरफ उपर की ओर दाहिने तरफ अन्नकण के लिए दर्भ सजाइये जैसे नीचे चित्र में दिखाया है





वश्वदेव के लिए अन्नकण रखें जैसे पहले उपर वाले दर्भ पर रखें
तक्षाय नमः उपतक्षाय नमः अम्वानमासि नमस्ते दुलानमासिनमस्ते नितंत्री नामासि० चुपनीका नामासि० अभ्रयन्ते नामासि० मेघयन्ते नामामि० बर्षयन्ते नामासि० नन्दिने० सुभगे० सुमंगले० भद्रंकरि० श्रियै हिरण्यकेश्यै नमः वनस्पतिभ्यो नमः धर्माय नमः अधर्माय नमः मृत्यवे० मरुद्भ्यो० वरुणाय० विष्णवे० वैश्रवणाय राज्ञे० भूतेभ्यो० इन्द्राय० इन्द्रपुरुषेभ्यो० वरुणाय० वरुण पुरुषेभ्यो० ब्रह्मणे० ब्रह्मण पुरुषेभ्यो० ऊर्ध्वं आकाशाय० स्थंडले दिवंचरेभ्यो भूतेभ्यो० नक्तं चरेभ्यो भूतेभ्यो० षट्त्रिंशत्तक्षादिभ्योऽन्नं नमः आचमनीयँ नमः।

अपसव्येन (बाइयां जनू करके दाहिनी तरफ वाले दर्भ पर पितरों/को देवताओंके बचे हुए अन्नसे अन्नकण दें) इसमें तिल और दूध साथ मिलावें पहले मुठी में तिल पानी दर्भ पर छिडक कर पितरों का नाम लेकर रखें

तिल छिडकने का मन्त्र समस्त माता पितृभ्यो द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्टे दर्भास्तरणे तिलोदकेन अवने जनं स्वधा।

अब पितरों का नाम ले कर अन्न दे जैसे तर्पणमें पितरोंका नाम लेते यदि उसमें कुछ गलती हो तो समस्त माता पितृभ्यो अन्नँ स्वधा (शब्द का प्रयोग करें)

अन्न रख कर जल से हाथ साफ करे फिर अंगूटे से चन्दन, जल या घी

का तिलक और अर्घ फूल लगाना समस्त माता पितृभ्यः संमाल भनं गंधः स्वधा अर्घं स्वधा पुष्पं स्वधा धूपं स्वधा दीपः स्वधा भक्षभोज्य फलमूल बलि नैवेद्यमाहारादि अन्नं स्वधा।

तिल पानी दूध आदि मिला कर तर्पण करें समस्त माता पितृभ्यो हिंमपानं स्वधा क्षीरपानं स्वधा मधुपानं० तिलोदकं० उदक तर्पणं स्वधा हिमं हिमं रजतं रजतम्

(सव्येन) दाहिना जञू करके तर्पण करें वसन्ताय नमः ग्रीष्माय नमः वर्षाभ्यो० शरदे० हेमन्ताय० शिशिराय० षड्तुभ्यो नमः

अग्नि में अन्न डालें अग्नये स्वष्टकृते स्वाहा

दोनों हाथ धोकर प्राणायाम करें फिर अग्नि को कोणे वाले पात्र से तीन बार छींटां दे ऋतँत्वा सत्येन विमुञ्चामि सत्यं त्वर्तेन विमुञ्चामि ऋत सत्याभ्यां त्वा विमुञ्चामि

अग्नि के चारों ओर डाले हुए दर्भ कीं चार तीलियों को उठाकर अग्नि में डाले और अग्नि से क्षमा माँग कर आशोषले नयामि ३। धर्मं देहि धनं देहि पुत्र पौत्रांश्च देहिमे आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहिमे हव्य वाहन भक्तिं देहि श्रियं देहि सुखं देहि स्वतन्त्रताम् देहि भोगं च मोक्षं च मनोभिलषितं तथा। गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ट ब्रह्म विष्णु, महेश्वर यत्र देवालयाः सर्वे तत्र गच्छ हुताशन।

अग्नि का तेज अपनी ओर हाथ से लाइये तेजोसि तेजोमयि देहि। इत्यामानं देहि भगवन सन्नि धत्सु।

दाहिने तरफ अन्नकण के सामने थोडा सा अन्न डालें भगवन यक्षम एतत्तेऽन्नं नमः एतते आचमनीयं नमः।

कंठोपवीती (अंगूठे में जञू रख कर अन्न डालें) हन्त मनुष्येभ्यः सनकादिभ्यः ऋषिभ्यः अन्नं नमः आचमनीय नमः

(सव्येन) दाहिना जन्रू करके चटू को तिलक और फूल लगाइए

या काचित्–योगिनी रौद्रा सोम्या घोरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा स्तुष्टा भवन्तु मे सदा। आकाश मातृभ्योऽन्नं नमः समालभनं गंधो नमः अर्घों नमः पुष्पं नमः।

अब फिर से अन्नकणों के सामने अन्न डालें सौरभेय्याः स्वर्गहिता पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्वन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः। गोभ्योंऽन्नं नमः काकेभ्योऽन्नं नमः श्वभ्यः श्वानकेभ्योऽन्नं नमः।

(बाइयां जन्रू करके अन्न डालें) रौरवाधीन सत्वानां प्रेतद्वारनिवासिनां। अर्थिनां याचमानानामक्षय्यमुपतिष्टतु।

दाहिना जन्रू करके अन्न डालें शुनाँ च पतितानां च श्चपचां पापरोगिणाम्। वायसानां कृमीणां चशनकैर्निक्षियेद्भुवि। इत्युच्चार्य नरो दद्यादन्नं श्रद्धा समन्वितः। भुवि भूतोप काराय गृहीसर्वा श्रयोयतः।

बाइयां जन्रू करके अन्न डालें यमाय धर्मराजाय मृयत्वे चान्तकायच। वैवस्वताय कालाय सर्व प्राणहरायच। औदम्बराय नीलाय ब्रध्नाय परमेष्टिने। वृकोदराय भीमाय चित्र गुप्ताय वै नमः। पाशहस्त कृतान्ताय प्रेताधिपतये नमः। श्री यमराजः धर्मराजः चित्रगुप्त स्तृप्तयेऽस्तु॥

(सव्येन) अब दाहिना जन्रू करके कुल रीति के अनुसार भगवान को भोग लगाये "डुल" के लिए अन्न, बन्नकाठ, सात अनाज, "सतसोस" खटाई आदि जो भी कुछ कुलरीति के अनुसार डालते अर्पण करें पहले दूध और कन्द फिर अन्न आदि दूध और कन्द चडाने का मन्त्र

कर कलित कपालाकुँडली दंडपाणि तरुण तिमर वर्णो व्याल यज्ञोपवीतः क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद दक्षो जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्। ॐ यो रुद्रो अग्नो योऽप्सु य ओषधीषु यो

वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः भगवते भवाय देवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्र वटुकनाथाय क्षीरं मिष्टान्नं समर्पयामि नमः।

अब डुलू सनिवारि आदि को भगवान के भोग का "डुलू" अन्न चढाइये

पाशाङ्कुशौ डमरकाद्ययुतौ वहन्तौ शुक्लं तथैक वदनं परिनृत्य मानम् दक्षाननं त्रिनयनं शिशिखण्ड चूढं ध्यात्वाऽर्चये वटुकमिन्द्रदिशि स्फुरन्तम् एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ! कपिल जटाभारभास्वर! त्रिनेत्र! ज्वालामुख! सर्वं विघ्नान् नाशय सर्वोपचार सहित बलिं गृहाण २ स्वाहा एषः बलिर्वटुकाय नमः।

शेष सनिवारी आदि को भी डालें क्षां क्षेत्रपतिभ्यो बलिं नमः रांराष्ट्रपतिभ्यो बलिं नमः सर्वे अभय वर प्रदा मयि पुर्ष्टि पुष्टि पतयो ददतु।

(अपसव्येन) बाइयां जन्र करके दाहिने तरफ अन्नकण को फूल लगाइये

पञ्चक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयशिला यत्र तत्र स्मरेन्नित्यं पितृणां दत्तमक्षयम्।

दाहिना जन्र करके हाथ में दर्भ की दो तीलियां लेकर भगवान के अछिद्र

करें ॐ भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेणं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॐ, ॐ ह्रीं श्रीं देवी पुत्राय विद्महे, क्षेत्रेश मुख्याय धीमहि। तन्नो वटुक भैरवः प्रचोदयात् ॐ तत्सत् ब्रह्म अद्यताव-त्तिथावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णपक्षस्य तिथावद्य द्वादश्यां वा त्रयोदश्यां ... . वारासनितायां महागणपते; कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्ष्म्याः विश्वकर्मणः द्वारदेवतानां प्रचापते ब्रह्मणः कलशदेवतानां ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवतानां चातुर्वेदेश्वरस्य सानुचरस्य ऋतुपते नारायणस्य फाल्गुणे शक्ति सहितस्य चक्रिणः क्रिया सहितस्य गोविन्दस्य दुर्गायाः त्र्यम्बकस्य वरुणस्य यज्ञपुरुषस्य अग्निश्वातादीनां पितृगण–

देवतानां कालरात्र्याः तालरात्र्याः रौद्ररात्र्याः राज्ञिरात्र्याः शिवरात्र्याः भगवतः भवस्य देवस्य पार्वती सहितस्य परमेश्वरस्य देवी पुत्रवटुक नाथस्य महागायत्र्याः सावित्र्याः सरस्वत्या; हेरुकादीनां वटुकादीनां आत्मनो वांङमनः कायोपर्जितपाप निवारणार्थ शिवरात्रि व्रत निमितं कलशपूजनमछिद्रं सर्वमस्तु एवमस्तु ।।

दर्भ की तीलियों को छोड कर तर्पण करें एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक तर्पणं नमः ।।

भगवान और कलश को क्षमा पुष्प अर्पण करें आज्ञामे दीयताँ नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे शरीर यात्रा सिद्धचर्थं भगवन क्षन्तुमर्हसि। आपन्नोस्मि शरण्योस्मि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्षमां शरणागतं ।। अज्ञानात् विस्मृते भ्रांत्या यन्यूनाधिकँ कृतं तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद वटुक भैरव। कामेश्वर जगन्नाथ सश्चित् आनन्द विग्रह गृहपूजां इमां देव प्रसींद वटुक भैरव। आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं। पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा च वचसा च मनसा च नमस्कारं करोमि नमः ।।

तर्पण फिर से करके अपने को और घर के सदस्यों को उसमें छीटा दे

नमो ब्रह्मणे नमो स्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः। नमोवाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे वृहते कृणोमि। इत्येतासामे व देवतानां सामीप्यँ सार्ष्टितां सायुज्यं सलोकतमाप्नोति य एवं विद्वान्स्वाध्या-यमधीते ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति।

अब पवित्र निकालें दिये को रुखसत करें और नैवेद्य ले तथा अपने कुटम्बियों में बांट कर खाये।

कश्मीरी पण्डित जनता अपने २ संप्रदाय के अनुसार शिवरात्रि पूजा करते हैं इस पूजा के अधिकारी तीन हैं। (१) वामाचारी (२) दक्षिणाचारी (३) महाचारी। शिवरात्रि के भेद भी तीन हैं। शुद्धा, मिश्रा, मिश्रा।

जैसे कहा है :- यासौ फाल्गुणमासस्य कृष्णादेवि त्रयोदशी।
हरस्यरात्रिका प्रोक्ता, भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
साचापि त्रिविधा प्रोक्ता, शुद्धामिश्रादिभेदतः॥

अर्थात् :- फाल्गुण मास की कृष्णत्रयोदशी हररात्रि कहलाती है जो भोग और मौक्ष को देती है। वह शुद्धा, मिश्रा, मिश्रा भेद से तीन प्रकार का है

(१) शुद्धा :- रात्रिन्दिनँ या देवेशि, जयातिथिरभीक्ष्णशः।
सा प्रोक्ता तंत्रपारज्ञैः शुद्धा सर्वाथकामदा॥
(धर्मचिन्तामणि)

अर्थात् :- जो त्रयोदशी तिथि तथा रात्रि में व्याप्त हो, वह सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली शुद्धा कहलाती है।

जैसे – त्रशे २ मिश्रा विष्णुनानुगताया च हरस्य रात्रिका परा।
सा प्रोक्ता देवदेवेशि मिश्रा चेति पुरातनै॥
(धर्मचिन्तामणि)

अर्थात् :- जो हररात्रि त्रयोदशी, द्वादशी मे प्रवेश करती हो उसे मिश्रा कहते हैं।

जैसे – द्वा दि० त्र प्र०

(३) मिश्रा – संध्याद्वये समाश्लिष्टा भास्वता या त्रयोदशी।
निशालिंगितभूतेशा, साऽपि मिश्रा मता बुधैः॥
(धर्मचि० विनोद)

अर्थात् – जिस शिवरात्रि–त्रयोदशी को सूर्य प्रातः संध्यां को स्पर्श करके सायं संध्या को भी विशेष स्पर्श करता हो और रात्रि में चतुर्दशी व्याप्त

हो वह भी मिश्रा कहलाती है। ऐसे तिथि विशेष में वामाचारी और महाचारी द्वादशी के प्रदोष और अर्धरात्र को पूजते हैं, क्योंकि दोनों कालों में त्रयोदशी व्याप्त होती हैं। जहां जहां आगे सूर्य के संध्या–द्वय-समाश्लेष का वर्णन हो वहां यही श्लोक प्रमाण भूत है।

१ द्वाप्र० त्रप० (दो) पहले दिन प्रदोषा र्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी सूर्य स्पर्श विशेष युक्ता भी,

२ द्वादि० त्रप्र० (दो) पहले दिन प्रदोषाऽर्धरात्रिव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनीं सूर्य स्पर्श विशेप युक्ता भी,

३ द्वाप्र० त्रदि० (दो) पहले दिन प्रदोषाऽर्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन सूर्य विथेष वा स्पर्श मात्र युक्त होने से ही,

४ द्वाशे १३ प्र १४ त्रशे० १६ (दो) रार्ध १५ पहले दिन अर्धरात्र–व्या० दूसरे दिन प्रदोश व्या०

५ द्वाशे ८ त्रशे० १३ प्र० १४ रार्ध १५ (एक) त्रयोदशी के प्रदोश से सबों को पूज्य हैं, दोनों दिन अर्धरात्र व्यापिनी नहीं है

६ त्रशे १६ प्र० १२ रार्ध १५ (दो) पहले दिन अर्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोष व्यापिनी,

७ द्वादि त्रदि (एक) त्रयोदशी यदि सायं–संध्या के साथ विशेष स्पर्श न करती हो।

८ द्वदि त्रदि २७-५८ (दो) यिनम् २८/१५ पहले दिन प्रदोषाध–रात्रव्यापिनी दूसरे दिन सूर्य विशेष, स्पर्श युक्ता

९ द्वाप्र० त्रशे (दो) पहले दिन अर्धरात्रव्यापिनी दूसरे दिन प्रदोश–व्यापिनीं सूर्य स्पर्श विशेष युक्ता,

१० द्वाशे० त्रशे (एक) त्रयोदशी को प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी सूर्य विशेष स्पर्श युक्ता

११ द्वादि० व्यहः चशे० (एक) द्वादशी के दिन सूर्य स्पर्श मात्र युक्ता

१२ त्रशे० त्रदि० (एक) पहली त्रयोदशी के दिन प्रदोषाऽर्धरात्रव्या–पिनी सूर्य विशेष स्पर्श युक्ता।

ودمشنزات، پایہ ستمی کی اجپات، مرتیو وناستہ کی اپونجیتا، کدکہ، دور، لجا گیہ ہرا، نولپود، شتمدی، آہو اہم، بیود، نجاناحی، بیتود، نجاناکی اپوحنیم، بوحجاکحاگم، نہ جاناحی، کھمیبہ تام پرمیشور۔

الشرانگ پرنام کرتے ہوئے پڑھیں:۔

اودھا لحبیام، حالوحبیام، پاپی لحبیام، شرسا یودسمہ بچہ وبچہ ساپچہ ملساچہ، کمشکارم، کرونی محمہ۔

تالی کرتے ہوئے پڑھیں!۔

کمو یر ہیمنے، کمو ہنو، گینتے لمنہ، بوکھتویے بزہ۔ ادتتہ عمی کبھیادہ کمو داپچے، کمو ناجیتیے کمو ولشنوکے، بومہتے، کرلونی، نیمی، بنیا سام، بلود، دیوتا تام، اساعی ہیم، ساولنتیتام۔ سالوعیم سلوکنام آپ نوتی، یہ لوم، ودوان سوادھیام، ادی تے ادم نانتی؛

شوجی کی آرتی

جے شوادھکار اسوامی ہر بچہ ادھکارا۔ برہما۔ ولشنہ۔ سداشیو کیولتے ماتہ تھاشواردانگی کردا۔
ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔

ایکانن۔ چترانن۔ پنچانن راجے۔ ہنساسنہ گرڈاسنہ۔ ورشباسنہ ساجے۔ ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔
دولوبحیہ، بجادبحیہ، کھڈبحیہ، دسلسہ کھوبنیہ نمم شوبہے۔ تنیہرو تنہ بپہ تو نستر تربھون جگ موہے۔
ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔

اکھنتہ مالا، ونتہ مالا، رنتڈہ مالا دھاری۔ چندن مرگہ۔ کرپا دکہ۔ شتہ دھاری۔
ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔

کرمدھیہ کمنڈل، چکر ترشول دھرتا۔ دکھ ہرتا سکھ کرتا۔ دکھ نشٹ ہے ہرتا۔
ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔

گائیتری، ساوتری۔ لکشمی ورسنگھے، پاربتی اردھانگی شوگو ما ستکھے۔
ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔

برہما، ولشنہ۔ سداشوم تینوں ایک سرودپا۔ اترنہ کو بھو، منہ کانگمہ بھیدپاوتہ یوہ ساگرہ نرسو۔ ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔

جتنا نندہ سودو پانو بھوانی کے رائیے بجاولی وید اچارے دنہ دنہ کے ماچے ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔
ہاتھوں میں انگن کانوں میں کنڈل گلے جو تبیں، فالا مرجوں میں ترنگ براجے اردھ جھت مرگہ جھالا۔ ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو۔ یہ تو تنش جو گنہ گاوے، ہر شرکرت بھیرو مایہ تال مردھنگا ادیا بیت ڈمرد
ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو؛

کاشی میں دشو ناتھہ وراجے نندا برہمچاری، نت اٹھ بھوگ لگاوے تھاتہ پھلاوے انوگرہ ساوے۔ ادم ہرہ ہرہ ہرہ مہادیو؛ (شری شنکر جی کی آرتی ختم)